एम.एच.डी.-24 : मध्यकालीन कविता–2
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–24
सत्रीय कार्य कोडः एम.एच.डी–24/टी.एम.ए/2021–2022
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित पद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : **10× 4 = 40**

(क) रहिमन विपदा हू भली, जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय।।

(ख) मूलन ही की जहाँ अधोगति केशव गाइय।
होम हुताशन धूम नगर एकै मलिनाइय।।
दुर्गति दुर्गन ही जु कुटिल गति सरितन ही में।
श्रीफल को अभिलाष प्रगट कवि कुल के जी में।।

(ग) मोर–पखा 'मतिराम' किरीट मैं, कंठ बनी बनमाल सुहाई।
मोहन की मुसकानि मनोहर, कुंडल डोलनि मैं छवि छाई।।
लोचन लोल बिसाल बिलोकनि, को न बिलोकि भयो बस माई ?
वा मुख की मधुराई कहा कहौं ? मीठी लगै अँखियान–लुनाई।।

(घ) आपुस मैं, रस मैं रहसैं, बहसै बनि राधिका कुंज विहारी।
स्यामा सराहत स्याम की पागहि, स्याम सराहत स्यामा की सारी।।
एकहि दर्पण देखि कहै तिय नीके लगौ पिय, प्यो कहै प्यारी।
देवसु बालम बाल को बादु बिलोकि भई बलि, हौं बलिहारी।।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (प्रत्येक का लगभग 500 शब्दों में) दीजिए : **15× 3 = 45**

(i) रीतिकाल के संदर्भ में मध्ययुगीनता की अवधारणा पर विचार कीजिए।
(ii) रहीम के काव्य की अंतर्वस्तु पर प्रकाश डालिए।
(iii) केशवदास के काव्य की विशेषताएँ बताइए।

3. निम्नलिखित प्रत्येक विषय पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए : **5× 3 = 15**

(i) हिंदी आलोचना में देव
(ii) मध्ययुगीन नीति काव्य
(iii) देव के काव्य का वैशिष्ट्य